

प्रेस विज्ञप्ति

सौर ऊर्जा होगा देश का अगला वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत

हिन्दुस्तान कॉलेज में एआईसीटीई द्वारा प्रायोजित एनर्जी कनवर्जन टेक्नोलॉजी में 6 दिवसीय कार्यशाला का शुभारम्भ, 20 इंजीनियरिंग कॉलेजों के शिक्षक कर रहे प्रतिभाग

शारदा ग्रुप के प्रतिष्ठित संस्थान हिन्दुस्तान कॉलेज ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी में ए.आई.सी.टी.ई और आई.एस.टी.ई, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित मकैनिकल इंजीनियरिंग विभाग में 'Energy Conversion Technology' पर 6 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 03 दिसम्बर, 2018 से 08 दिसम्बर, 2018 के दौरान किया जा रहा है जिसका विधिवत उद्घाटन कार्यशाला में उत्तर प्रदेश के लगभग 20 इंजीनियरिंग कॉलेजों के लगभग 40 से अधिक शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने अपना पंजीकरण कराये हैं। विदित रहे कि इस कार्यशाला के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि सलाहकार/वैज्ञानिक 'G', एम.एन.आर.ई., भारत सरकार के श्री सोहेल अख्तर एवं विशिष्ट अतिथि निदेशक, केन्द्रीय विद्युत प्रधिकरण मंत्रालय के डॉ. मौहम्मद मौज्जम रहे।

कार्यशाला का शुभारम्भ मुख्य एवं विशिष्ट विभूतियों द्वारा माँ शारदा के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया गया।

शारदा ग्रुप के कार्यकारी उपाध्यक्ष प्रो. वी. के. शर्मा एवं निदेशक डॉ. राजीव कुमार उपाध्याय ने कार्यशाला में आये मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते वर्तमान परिदृश्य में ऊर्जा रूपान्तरण की चुनौतियों के बारे में अवगत कराया। उन्होंने बताया कि ऊर्जा के बिना मानव को कोई अस्तित्व नहीं है।

विशिष्ट अतिथि निदेशक, केन्द्रीय विद्युत प्रधिकरण मंत्रालय के डॉ. मौहम्मद मौज्जम ने कहा कि जो लोग सफर की शुरुआत करते हैं वो लोग चीज पा भी लेते हैं बस एक बार चलने का हौसला कर ले। उन्होंने लद्दाख में स्थापित जीओ थर्मल प्लांट के बारे में बताया। उन्होंने जमीन के भीतर से ऊर्जा को निकालने में आने वाली चुनौतियाँ का जिक्र किया।

मुख्य अतिथि सलाहकार/वैज्ञानिक 'G', एम.एन.आर.ई., भारत सरकार के श्री सोहेल अख्तर ने बताया कि विद्युतीकरण समाजिकता का पहल कदम है। उन्होंने पृथ्वी से प्राप्त गैसोलीन एवं अन्य पेट्रोलियम के स्रोतों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि प्रदूषण की नियंत्रण करना भी जरूरी है। सभी पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों से काफी मात्रा में प्रदूषण बढ़ता है जिसको नियंत्रण करने के लिए गैर पारंपरिक स्रोतों का उपयोग जैसे पवन, सौर, जल इत्यादि किया जा सकता है। उन्होंने नोडल मंत्रालय के पाँच स्तम्भों के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी जिसमें एन.आई.एस.ई. (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ सोलर एनर्जी) जो सौर ऊर्जा से सम्बन्धित है। दूसरा स्तम्भ सरदार स्वर्ण सिंह नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रिन्यूएबल एनर्जी लुधियाना जो कि बायोमॉस ऊर्जा से सम्बन्धित क्रियाकलापों क्रियान्वयन करता है। तीसरा स्तम्भ सोलर एनर्जी कार्पोरेशन ऑफ इंडिया, दिल्ली (एस.ई.सी.आई.) जो कि रिन्यूएबल एनर्जी के कार्यक्रमों का संचालन करता है। चौथा स्तम्भ इंडियन रिन्यूएबल एनर्जी डवलपमेंट (आई.आर. ई.डी.ए., दिल्ली) इस तरह के कार्यक्रमों के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करने का काम करता है। पाँचवा स्तम्भ नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ विन्ड एनर्जी (एन.आई.डब्ल्यू.ई, चेन्नई) पवन ऊर्जा से सम्बन्धित कार्यक्रमों का संचालन एवं निर्वाह करता है।

उन्होंने कहा कि हम भारतीय बड़े भाग्यशाली हैं कि हमें 300 ऊष्मीय दिवस प्राप्त होते हैं जो कि विश्व में दो या तीन देशों में से एक है। सौर ऊष्मा की तीव्रता 4-7 किलो वॉट घंटा प्रति वर्ग मीटर प्रतिदिन प्राप्त होता है जो कि अपने आप में बहुत उल्लेखनीय है। इस श्रृंखला में भारत के तीन स्थान जम्मूकश्मीर, लद्दाख, राजस्थान अग्रसर हैं। श्री सोहेल ने बताया कि मिशन 175 गीगा वॉट 2022 के बारे में बताया कि जिसमें उन्होंने पारम्परिक ऊर्जा के संसाधनों के अपेक्षा गैर पारम्परिक संसाधनों के उपयोग को प्राथमिकता दी साथ ही साथ 2030 तक 40 प्रतिशत विद्युत ऊर्जा चालित वाहनों के चलन की बात पर जोर दिया। उनके अनुसार ऊर्जा मंत्रालय द्वारा दी जाने वाली आर्थिक मदद शैक्षणिक संस्थानों के अतिरिक्त औद्योगिक क्षेत्र में इसे बढ़ावा देने की बात कही गयी क्योंकि शैक्षणिक संस्थायें प्रयोगिक अनुसंधान में उतना अच्छा कार्य नहीं करती जितना कि औद्योगिक संगठन जैसे महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, टाटा मोटर्स, मारुती सुजुकी कर सकते हैं। इसे क्षेत्र में भारत की पहली विद्युत चालित कार रेवा का जिक्र किया जो कि रेवा और महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा के पारस्परिक सहयोग से उत्पादित की जा रही है। ये एक बार चार्ज करने पर 180 किलोमीटर तक दौड़ सकती है।

मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर श्री दिलीप जौहरी ने कार्यशाला के उद्घाटन समारोह का सफल संचालन किया। और 6 दिवसीय कार्यशाला के विभिन्न कार्यक्रम की जानकारी दी। कार्यशाला में व्याख्यान कर्ता विशेषज्ञों एवं प्रतिभागियों के साथ-साथ मुख्य विषयों जिन पर कार्यशाला में चर्चा होनी है पर संक्षिप्त विवरण दिया।

इस कार्यशाला के समन्वयक एवं मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्ष श्री पुनीत मंगला ने कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर संस्थान के समस्त शिक्षकगण एवं प्रतिभागी उपस्थित रहे।